

ପଦ୍ମାର୍ଥଗୀତିକୋଣଶ୍ଵରାବ୍ୟକ୍ଷମାଠ କୃଣମାର୍ତ୍ତ ॥

ପାତ୍ରମାଣ ପାତ୍ରକ

३८ ॥ यत्प्राणपरिहृष्टोपात्रात्मा लोकान्वयन्वास्त्वा ॥ वाचोलोक्यमात्रकांश्चास्त्रा ॥ देवानुग्रहात्मा
देवानुग्रहात्मा ॥ वैद्यांश्चास्त्रा ॥ प्रस्तुविद्वात्मान्विष्वामात्मा ॥ तीर्त्युपात्रात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥
वर्णविद्वात्मा ॥ तीर्त्युपात्रात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥
वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥
वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥ वर्णविद्वात्मा ॥

ମୁଖାପାତ୍ରିଣୀଜୟବଳାନୀପଦି
କ୍ଷାଯତ୍ତିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ । ॥**କ୍ଷାଯତ୍ତିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ** ॥ ଶ୍ରୀକୃତ୍ତିଲ୍ଲିଲ୍ଲିକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ
ପଳାନ୍ତାର୍ଥିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ ॥ ପ୍ରମାଣାର୍ଥିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ
ଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ଶ୍ରୀକୃତ୍ତିଲ୍ଲିଲ୍ଲିକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ଶ୍ରୀକୃତ୍ତିଲ୍ଲିଲ୍ଲିକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥
ନର୍ତ୍ତିପାତ୍ରିଣୀକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ । ॥**କ୍ଷାଯତ୍ତିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ** ॥ ମୁଖାପାତ୍ରିଣୀକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ॥
ପଳାନ୍ତାର୍ଥିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ ॥ ପଳାନ୍ତାର୍ଥିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ॥
ଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ଶ୍ରୀକୃତ୍ତିଲ୍ଲିଲ୍ଲିକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥ ଶ୍ରୀକୃତ୍ତିଲ୍ଲିଲ୍ଲିକାରୀପଦିକ୍ଷାମ୍ବିଳୀ ॥
କ୍ଷାଯତ୍ତିର୍ଯ୍ୟିଲ୍ଲାପ୍ରାଣୀ ॥

२४॥ ल्लोकनं कामद्वयपा॥ तुपाग्निर्वायर्कायाणजीवीत्॥ पराजि ल्लोकपार्विवर्षात्रिकापा॥ उष्ट्रित्वा
श्रीकृष्णप्रसादमुप्या॥ शुरुर्विप्रविष्टाव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्याव्या॥ त्रिप्रसादात्
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्याव्या॥
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्याव्या॥
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥
क्षेत्राव्याव्याव्याव्याव्याव्या॥ शुरुर्विष्टाव्याव्याव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥ श्रुतेपात्रुप्रविष्टाव्या॥

२४
३॥ कृष्णकापायी शुभ्रयुग्मपात्री ॥ यत्प्रतिमापराह्न ॥ गुरुमाजुलापार्वा ॥ देष्टात्रवृणि
प्रेपात्रिकाद्यर्थ ॥ मात्रमप्युपर्य ॥ शुभ्रत्रित्वापार्वा ॥ शुभ्रत्रिप्रविक्षिप्ता ॥ शुभ्रत्रिक्षिप्ता ॥ अर्थात्
शुभ्रपर्य ॥ प्रिणत्वायोक्त्वा ॥ शम्भ्रात्रुक्त्वाप्यर्थ ॥ शुभ्रप्रायुवास्त्रा ॥ वाक्त्वाप्रत्येक्त्वा ॥ शुभ्रायोक्त्वा
शुभ्रपर्य ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा ॥ गुरुमाजुलापर्य ॥ यद्यात्रिव्यक्त्वापायी शुभ्रप्रत्येक्त्वाप्यर्थ ॥ व्यापार्वा
शुभ्रायोक्त्वाप्रत्येक्त्वा ॥ शुभ्रत्रित्वायोक्त्वा ॥ यद्यात्रिव्यक्त्वाविक्षिप्ता ॥ गुरु
प्रायुवायीप्रत्येक्त्वा ॥ एवेषापात्रुविक्षिप्ता ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा ॥ प्रजाप्रत्येक्त्वाविक्षिप्ता
प्रिणत्वायोक्त्वाप्यर्थ ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा ॥ वास्त्राप्रत्येक्त्वा

८३॥ त्रिवर्णीपुरायुधन् ॥ गमाक्षुरायुद्युपायाक्षुर् ॥ श्रीयज्ञानेत्पार्वीपुरायुधन् ॥
पीयुधन् ॥ क्षेत्रीपुरायुधन् ॥ देवायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ अस्त्रपावनीपुरायुधन् ॥ चिपाल
नारसादोवक्षोपुरायुधन् ॥ वृत्तायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ इव विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥
ब्रह्मपुरायुधन् ॥ ब्रह्मपुरायुधन् ॥ त्रिवर्णीपुरायुधन् ॥ त्रिवर्णीपुरायुधन् ॥ त्रिवर्णीपुरायुधन् ॥
त्रिवर्णीपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥
विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥
विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥ विष्णुपुरायुधन् ॥

པාරාජු ගැජාජු යැඹිතාජු තේත්පෑජීපාජාජු
සැජාජු නැජාජු